ॐ **Sri Ganeshaya Namaha**

Jananee Janma Sowkhyanam
Vardhaneekula Sampadam
Padvee Poorva Punyanam
Likhyate **Janma Patrikaa**

The above verse in Sanskrit language means:

For the welfare of the mother and the child
For the growth of the family happiness
To follow the ancient virtuous practices
The **horoscope** is written

नाम	: Sample
लिंग	: स्त्री
जन्म तिथि	: 27 अप्रेल, 1992 सोमवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 11.50.00 AM; Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05.30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
समय पध्धति	: Standard Time
जन्म स्थल	: Virudunagar
रेखांश (Deg.Mins)	: 077.58 पूरब
अक्षांश (Deg.Mins)	: 09.36 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
जन्म नक्षत्र	: **शतभिषा**
नक्षत्र पद	: 1
नक्षत्र का देव	: राहु
जन्म राशी	: **कुंभ**
राशी का देव	: शनि
लग्न	: कर्क
लग्न का देव	: चंद्र
तिथि	: दसमि, कृष्णपक्ष
करण	: विशथी
नित्ययोग	: ब्रह्मा
सूर्योदय (Hrs.Mins)	: 06.03AM Standard Time
सूर्योस्त (Hrs.Mins)	: 06.29PM " "
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: सोमवार
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 18 Mins

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार

[Astro-Vision LifeSign 9.5S Hin-0-151216]

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का चिह्न - वृषभ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	119:50:37	गुरु	154:38:51 रितु
चन्द्र	333:00:18	शनि	317:41:35
सूर्य	37:15:02	युरानस	287:59:52 रितु
बुध	10:24:50	निपट्यून	288:56:31 रितु
शुक्र	24:36:52	प्लूटो	231:58:32 रितु
कुज	353:22:28	नोड	273:35:29

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 45 मिनिट. 15 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	96:05:22	कर्क	6:05:22	पुष्य	1
चंद्र	309:15:03	कुंभ	9:15:03	शतभिषा	1
रवि	13:29:47	मेष	13:29:47	भरणी	1
बुध	346:39:36	मीन	16:39:36	उ.भाद्रपद	4
शुक्र	0:51:37	मेष	0:51:37	अश्विनी	1
मंगल	329:37:13	कुंभ	29:37:13	पू.भाद्रपद	3
गुरु	130:53:36	सह	10:53:36रितु	मघा	4
शनि	293:56:20	मकर	23:56:20	धनिष्ठा	1
राहु	249:50:14	धनु	9:50:14	मूल	3
केतु	69:50:14	मिथुन	9:50:14	आर्द्रा	1
गुलिक	144:41:49	सह	24:41:49	पु.फाल्गुनी	4

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	पुष्य	शनि	बुध	शुक्र
चंद्र	शतभिषा	राहु	गुरु	बुध
रवि	भरणी	शुक्र	शुक्र	शुक्र
बुध	उ.भाद्रपद	शनि	गुरु	राहु
शुक्र	अश्विनी	केतु	शुक्र	शुक्र
मंगल	पू.भाद्रपद	गुरु	चंद्र	राहु
गुरु	मघा	केतु	शनि	राहु
शनि	धनिष्ठा	मंगल	मंगल	शुक्र
राहु	मूल	केतु	शनि	बुध
केतु	आर्द्रा	राहु	गुरु	रवि
गुलिक	पु.फाल्गुनी	शुक्र	बुध	रवि

राशी

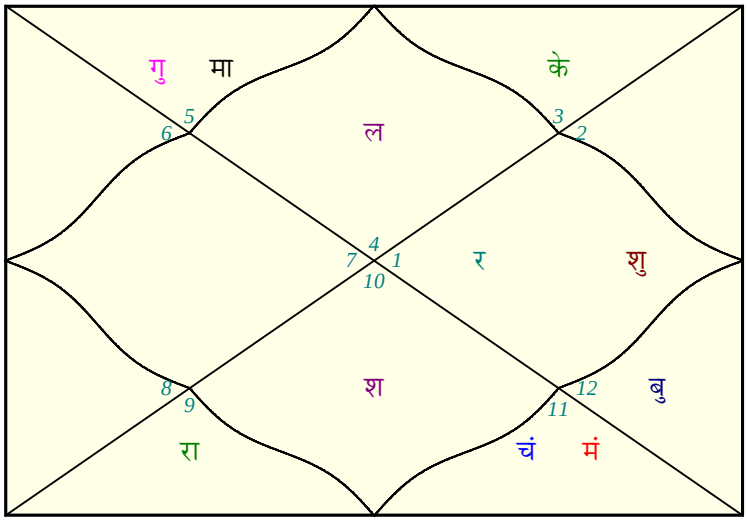

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 14 साल, 6 महीने, 4 दिन

चं	=	चंद्र	र	=	रवि	बु	=	बुध
शु	=	शुक्र	मं	=	मंगल	गु	=	गुरु
श	=	शनि	रा	=	राहु	के	=	केतु

भाव कुंडली

भाव	आरंभ डि : मि :से	मध्य डि : मि :से	अन्तिम डि : मि :से	गृहों भाव में उपस्थित है
1	81:12:37	96:05:22	111:12:37	
2	111:12:37	126:19:52	141:27:07	गु
3	141:27:07	156:34:22	171:41:37	मा
4	171:41:37	186:48:52	201:41:37	
5	201:41:37	216:34:22	231:27:07	
6	231:27:07	246:19:52	261:12:37	रा
7	261:12:37	276:05:22	291:12:37	
8	291:12:37	306:19:52	321:27:07	चं श
9	321:27:07	336:34:22	351:41:37	बु मं
10	351:41:37	6:48:52	21:41:37	र शु
11	21:41:37	36:34:22	51:27:07	
12	51:27:07	66:19:52	81:12:37	के

भाव

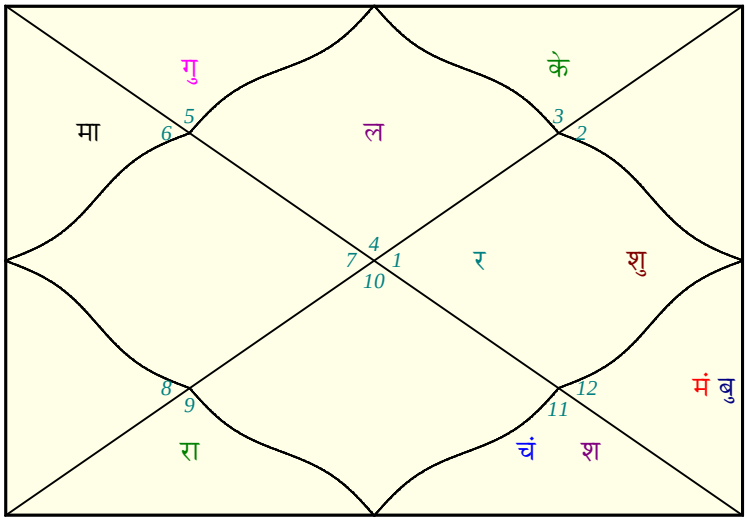

वर्ग के स्वामी

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	चं	श	मं	गु	मं	श	र	श	गु	बु	र
औरा	चं	र	र	र	र	चं	र	र	र	र	चं
द्रिख्खन	चं	श	र	चं	मं	शु	गु	बु	गु	बु	मं
चतूथांश	चं	शु	चं	बु	मं	मं	मं	शु	गु	बु	शु
सप्तांश	श	मं	चं	गु	मं	र	शु	गु	श	र	श
नवांश	र	गु	र	मं	मं	बु	चं	र	बु	गु	मं
दशांश	शु	शु	र	मं	मं	मं	मं	मं	गु	बु	मं
व्दादशांश	बु	शु	बु	बु	मं	श	गु	शु	गु	बु	शु
सोडांश	चं	गु	मं	र	मं	मं	श	मं	शु	शु	बु
त्रिंमशांश	बु	श	गु	गु	मं	शु	गु	श	श	श	बु

नवांश

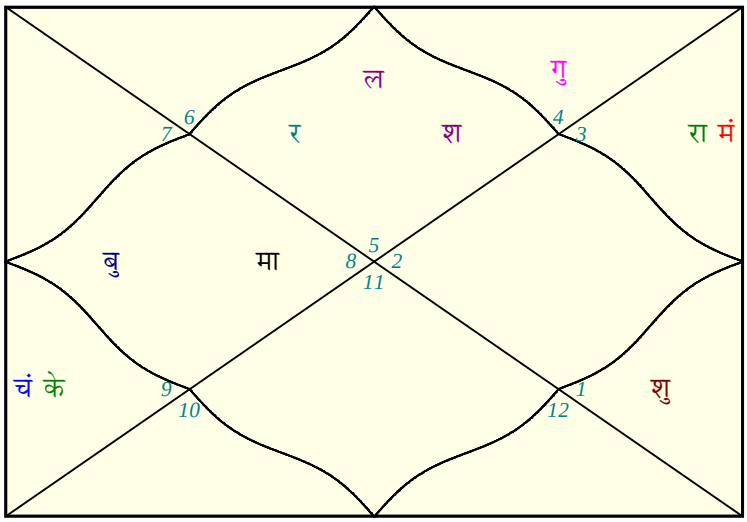

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	5	3	5	3	3	4	26
वृषभ	4	4	5	6	4	6	3	32
मिथुन	6	2	2	4	2	5	3	24
कर्क	5	4	6	4	5	3	5	32
सह	3	3	6	4	4	6	1	27
कन्या	3	4	4	3	5	3	2	24
तुला	4	5	3	4	1	4	3	24
वृश्चिक	5	5	5	5	3	5	4	32
धनु	5	6	6	4	3	7	5	36
मकर	3	4	3	4	4	4	4	26
कुंभ	4	4	6	4	3	4	3	28
मीन	4	2	5	5	2	6	2	26
	49	48	54	52	39	56	39	337

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

जन्म के समय दशा की समतुलना = राहु 14 साल, 6 महीने, 4 दिन

दशा के बदनते समय उम्र

दशा	उम्र के प्रारंभ काल में		
गुरु	14 साल,	06 महीने,	04 दिन
शनि	30 साल,	06 महीने,	04 दिन
बुध	49 साल,	06 महीने,	04 दिन
केतु	66 साल,	06 महीने,	04 दिन
शुक्र	73 साल,	06 महीने,	04 दिन
रवि	93 साल,	06 महीने,	04 दिन

दशा और भुक्ती का विवरण काल

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
रा	गु	27-04-1992	06-12-1993
‘	श	06-12-1993	12-10-1996
‘	बु	12-10-1996	01-05-1999
‘	के	01-05-1999	19-05-2000
‘	शु	19-05-2000	20-05-2003
‘	र	20-05-2003	12-04-2004
‘	चं	12-04-2004	12-10-2005
‘	मं	12-10-2005	31-10-2006
गु	गु	31-10-2006	18-12-2008

‘	श	18-12-2008	01-07-2011
‘	बु	01-07-2011	06-10-2013
‘	के	06-10-2013	12-09-2014
‘	शु	12-09-2014	13-05-2017
‘	र	13-05-2017	01-03-2018
‘	चं	01-03-2018	01-07-2019
‘	मं	01-07-2019	06-06-2020
‘	रा	06-06-2020	31-10-2022
श	श	31-10-2022	02-11-2025
‘	बु	02-11-2025	13-07-2028
‘	के	13-07-2028	21-08-2029
‘	शु	21-08-2029	21-10-2032
‘	र	21-10-2032	03-10-2033
‘	चं	03-10-2033	04-05-2035
‘	मं	04-05-2035	12-06-2036
‘	रा	12-06-2036	19-04-2039
‘	गु	19-04-2039	30-10-2041
बु	बु	30-10-2041	28-03-2044
‘	के	28-03-2044	25-03-2045
‘	शु	25-03-2045	24-01-2048
‘	र	24-01-2048	30-11-2048
‘	चं	30-11-2048	01-05-2050
‘	मं	01-05-2050	28-04-2051
‘	रा	28-04-2051	15-11-2053
‘	गु	15-11-2053	21-02-2056
‘	श	21-02-2056	31-10-2058
के	के	31-10-2058	29-03-2059
‘	शु	29-03-2059	28-05-2060
‘	र	28-05-2060	03-10-2060
‘	चं	03-10-2060	04-05-2061
‘	मं	04-05-2061	30-09-2061
‘	रा	30-09-2061	19-10-2062
‘	गु	19-10-2062	24-09-2063
‘	श	24-09-2063	02-11-2064
‘	बु	02-11-2064	30-10-2065
शु	शु	30-10-2065	01-03-2069
‘	र	01-03-2069	01-03-2070
‘	चं	01-03-2070	31-10-2071
‘	मं	31-10-2071	30-12-2072
‘	रा	30-12-2072	31-12-2075
‘	गु	31-12-2075	31-08-2078
‘	श	31-08-2078	30-10-2081
‘	बु	30-10-2081	30-08-2084
‘	के	30-08-2084	30-10-2085

र	र	30-10-2085	17-02-2086
‘	चं	17-02-2086	19-08-2086
‘	मं	19-08-2086	24-12-2086
‘	रा	24-12-2086	18-11-2087
‘	गु	18-11-2087	05-09-2088
‘	श	05-09-2088	18-08-2089
‘	बु	18-08-2089	25-06-2090
‘	के	25-06-2090	31-10-2090
‘	शु	31-10-2090	31-10-2091

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

ससमहायोग

लक्षण : जन्मकुंडली में शनि स्वगृह में उच्चस्थान पर।

शश योग के कारण आप या आपके पति या माँ-बाप, पुलिस, सेना या कानूनी विभाग से संबन्धित हो सकते हैं। आप अपना हर कार्य राजकीय पद्धति से करनेवाली हैं। आप के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को आश्रय प्राप्त होगा। अनेक लोग आप के सहारे से आगे बढ़ पायेंगे। नीच बुद्धि के लोग आप की कीर्ति को कलंकित करने का प्रयत्न कर सकते हैं। ऐसे व्यक्तियों से सतर्क रहना ही बुद्धिमानी होगी। यद्यपि वे सफल नहीं होंगे।

नीचभंगराज योग

लक्षण : बुध क्षीण और नीचभंग से प्रभावीत है।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

सुनभयोग

लक्षण : सूर्य को छोडकर कोई भी गृह चन्द्र से दूसरे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि की स्थिति से सुनभा योग बनता है। यह ग्रह अकेले हो या अन्य ग्रहों के साथ हो। सुनभा योग में जन्म लेने से यह साफ़ बताया जा सकता है कि आप बड़ी बुद्धिशाली एवं प्रसिद्ध महिला बनेंगी। आप विदुषी महिला हैं। आपके पास धन की कमी नहीं होगी। संगीत तथा अन्य कलाओं में अभिरुचि जागृत होगी। लोगों के बीच मान्यता प्राप्त होगी। जीवन में स्वप्रयत्न के माध्यम से प्रगति प्राप्त करने का प्रयास चालू रहेगा। अन्य लोगों के बातचीत करने के ढंग को देखकर उनके मनोभाव को जानने में प्रवीण हैं।

अनभयोग

लक्षण : सूर्य के अतिरिक्त कोई भी गृह चन्द्र से बारहवे स्थान पर रहा है।

चन्द्र लग्न से बारहवीं राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि अकेले या एक साथ स्थित रहने पर अनभा योग बनता है। अनभा योग लड़की और उसके पति को श्रीमंत और सुखी बनाता है। भौतिक संपत्तियों से तथा लौकिक प्रतिष्ठाओं के साथ आपका चरित्र सुशोभित रहेगा। आपको अच्छे कपड़े, आभूषण और नये परिधान अच्छे लगते हैं। अपनी दानशीलता तथा दयाशीलता से आप एक कुशल गृहिणी कहलायेंगी। धनी होते हुए भी आप व्यवहार में अहंकार और चंचल स्वभाव से मुक्त रहेंगी। स्वभाव में विनयभाव प्रकट हो उठेगा। योग्य शारीरिक सौन्दर्य, शाँत गंभीर मुखमुद्रा इन योगवालों के लक्षण हैं। आपका करुणापूर्ण व्यवहार और विनय आप को कीर्ति प्रदान करेगा।

दूरदूरयोग

लक्षण : अनभ और सुनभ दोनो योग प्राप्य हैं।

जन्म पत्रिका में जब सुनभा और अनभा योगों की जोड़ी बनती हैं तब उसे दुरुधरा योग कहा जाता हैं। यह योग आपकी कुंडली में बना है। इसके अनुसार आप धनी महिला बनी रहेगी। इसका फल लड़कपन में पिता को और शादी के बाद पति को प्राप्त होगा। धन का अभाव आपको कभी न होगा। इतनी सुविधा होते हुए भी आप अहंकार
और अक्कड़पन से मुक्त रहेंगे। विनयपूर्ण एवं प्रेमपूर्ण स्वभाव से श्रेष्ठ गृहिणी का पद सुशोभित होगा। आपको सभी सुखसुविधाएँ प्राप्त होगी। आप संपन्नता की प्रतिमूर्ति हैं। आप को वाहन योग प्राप्त हैं।

गज़केसरी योग

लक्षण : चन्द्र से लेकर गुरु ने केन्द्रस्थान प्राप्त किया है।

गजकेसरी योग गुरु और चन्द्र के परस्पर केन्द्रस्थ होने से बनता है। आप का जन्म इस योग में होने से ज्योतिशास्त्र के आधार पर ऐसा माना जाता हैं कि आपका जन्म जिस परिवार में हुआ वह सौभाग्य से भरा रहेगा। आप जहां कहीं भी रहेंगी वहाँ धन, संपत्ति तथा विजय ज़रूर प्राप्त होगी। यही नहीं केसरीयोग की ऐसी विशेषता होती हैं कि इस योग में पैदा होने वाली लड़की अपने पति के केमद्रुम आदि योगों का दोष दूर कर देती है। सामान्य रूप में आप दीर्घायु रहेगी और आपका जीवन सफल रहेगा। दूसरी औरतों की अपेक्षा आप विपरीत परिस्थिति में भी बुद्धि और चिंतन के माध्यम से समस्याओं का निराकरण कर पायेंगी।

अमलयोग

लक्षण : लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आपका जन्म अमला योग में होने से आप और आप के पति संपत्ति और कीर्ति उपार्जन कर पायेंगे। आप के विरुद्ध मनोभाव और कल्याणकारी कार्यों को जन समूह आसानी से समझ पायेंगे। आप बड़ी अमीर बन जाएँगी। हृदय की निर्मलता से आप को समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त होगा। इस कारण मान्यता भी प्राप्त होगी। आपका सारा जीवन सुखपूर्ण और ऐश्वर्यमय रहेगा।

सशीमंगलयोग

लक्षण : चन्द्र और मंगल एक ही स्थान पर रहे हैं।

आपकी जन्मपत्रिका में कुज (मंगल) और चन्द्र एक ही राशि में होने से आपको इस योग की प्राप्ति हुई है। शशिमंगल योग के अनुग्रह से आप का जीवन आनन्दमय रहेगा। जन्म की तिथि से यानी बालावस्था से धन की कमी का अनुभव आपको नहीं होगा। आपकी आवश्यकतायें जल्दी ही पिता या पति से पूरी की जायेगी। आपकी जन्मपत्रिका के आधार पर, आपकी आवश्यकता के अनुसार आपके माँ-बाप या पति के हाथ में रुपये का प्रवाह ही हो जाता है। कहीं न कहीं से आपकी आवश्यकता फलीभूत होती रहेगी। धन की देवी कभी भी आपको छोड़कर नहीं जायेगी।

मात्रुमूलधन योग

लक्षण : दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामीत्व के सहयोग में रहा है।

आपको मात्रकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

नाम : Sample [स्त्री]

श्री

इसमें आपके स्वभाव और जीवन-पद्धति पर ग्रहों के प्रभाव का उल्लेख किया गया हैं। पुनरावृत्ति या परस्पर विरोधी फल शायद दिखायी दें। लेकिन यथार्थ में यह विरोधाभास तो ग्रहों के स्वच्छन्द तथा संगठित प्रभाव से उत्पन्न होनेवाली गुण विशेषता है। प्रत्येक ग्रह अपनी महादशा, अंतरदशा, प्रत्यंतरदशा वगैरह में अपनी और दूसरे बदलते ग्रह के संजोग कारण अलग छाप देता हैं।

जन्म नक्षत्र : शतभिषा

जन्मनक्षत्र शतभिषा है। आपके आश्रय में आए हुए व्यक्ति निराश नहीं होंगे। आप उदार दिल की महिला हैं। आप व्यवहार में सरल और निर्मल हैं इस कारण कोई भी आपकी ओर उँगली नहीं उठा पायेगा। आप रचनात्मक कार्यों में अति अभिरुचि रखनेवाली नारी हैं।

अपने व्यक्तिगत जीवन के रहस्यों से दूसरे लोगों को परिचित करना आप पसंद नहीं करती। कोई सूक्ष्मदृष्टि से आपके जीवन का अवलोकन करेगा तो ज़रूर पता चलेगा कि आपके जीवन में कुछ कमी है। यह होते हुए भी कमी के कारण को जान नहीं पायेंगे।

कभी कभी स्वभाव से चंचलता प्रगट हो सकती है। महत्वपूर्ण कार्यों को नीतिबोध के साथ निर्वाह करने में निपुण हैं। परिवार के अन्य लोगों से अपेक्षा रखना निराशा का कारण बन सकता है। अपने विचार और धारणा को बदलना कठिन बात है। आपके विवाह के बाद आपके पति को बड़ा लाभ होगा।

आचरण से आप निष्ठावान महिला हैं। स्वभाव से आप गर्म मिज़ाज की हैं। इस कारण परिवार के बीच कलुषित वातावरण पैदा होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। किसी कारण पर कुछ दिन पति से दूर रहने का अवसर आ सकता है। वैचारिक मतभेद और पारिवारिक क्लेश बड़ा रूप न ले सकें, इस बात का विशेष ध्यान रखें। आपकी वाणी की मधुरता स्थिति को संभाल पाने में सहायक होगा।

वायु संबन्धी विकारों से बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। मूत्राशय के अन्य रोगों से बचते रहना भी आवश्यक है। रोग के चिन्ह दिखाई देते ही डाक्टरी जांच करवाना और उनकी सलाह को ध्यान में रखना लाभदायी होगा।

तिथि : दसमि

दशमी तिथि में जन्म होने से आप की विशाल मानसिकता प्रशंसनीय होगी। बहुत छोटी आयु से इस कला को हस्तगत करने में बड़ी कीर्ति प्राप्त होगी। आप शान्त भाव धारण करने वाले हैं। आप गंभीर मुखभाव धारण करने वाले हैं। आप अपनी संपन्नता दूसरों को दिखाने में रुचि नहीं रखते। आप स्वगृह और स्वसमुदाय के बीच स्नेह संपन्नता प्राप्त करेंगे। आप आमोद प्रमोद के बड़े पुजारी हैं। आप उदार हृदय, अत्यन्त नम्र व्यवहार वाले और कामी होंगे।

नित्ययोग : ब्रह्मा

आपका जन्म ब्रह्म नित्ययोग में हुआ है। स्वभावतः आप आत्मज्ञान, विज्ञान तथा ज्ञान के धनी होंगे। आत्मनिष्ठा और ईश्वर विश्वास आपके नैसर्गिक गुण हैं। आप सब तरह के लौकिक सुख पसन्द करते तो हैं पर आवश्यकता पड़ने पर आप सब कुछ न्यौधावर करने की तैयारी भी रखते हैं। इसलिए आप दूसरों का आदर प्राप्त कर सकते हैं। विज्ञान और धन दोनों के समान रूप के अधिकारी हैं। आपका जीवन विद्या से जुड़ा रहेगा। एक साथ अनेक विषयों में पारंगता प्राप्त होगी।

लग्न : कर्क

आपके लग्न स्थान में कर्क राशि है। पित्त के प्रकोप से स्वास्थ्य विषय में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कोई भी चीज़ जब भी किसी से पायेंगे तो पूरी सावधानी से उपयोग करने वाले स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप प्रतिभा शाली व्यक्ति हैं। बुद्धिपूर्ण कार्यों में सरलता से सफलता प्राप्त होना

संभव होगा। मिष्ठान्न अधिक प्रिय होगा। साधु-महात्माओं पर श्रद्धा होगी। सज्जन व्यक्तियों के साथ संबन्ध स्थापित करना पसंद करते हैं। तामसी व्यक्तियों से आपको संपत्ति प्राप्त होगी। आपकी उन्नति में पिताश्री का महत्वपूर्ण सहयोग होगा। स्वपुरुषार्थ और प्रयत्न के माध्यम से संपत्ति का उपार्जन होगा। प्राप्त हुआ धन अन्य लोगों की भलाई के कार्य में उपयोग किया जाएगा। रक्षाविषयक विद्या में प्रवीणता प्राप्त हो सकती है। कोई आयुध धारण करने की मन में इच्छा छिपी पड़ी है। स्वभाव में आप श्रेष्ठ हैं फिर भी पूर्णिमा के सुन्दर चांद में लगे हुए काले धब्बों जैसा क्रोध आप में छिपा पड़ा है। आपके मित्रों को आपके माध्यम से अनेक लाभ होनेवाले हैं। स्पष्ट वादिता, पारिवारिक संस्कारों की रक्षा, लोक प्रियता और शिक्षा से लगाव इत्यादि बातें भी आपमें पूरी तरह प्रकट होगी। राजनीति में सफलता प्राप्त होगी।

सातवें स्थान में मकर राशि के होने से जीवन साथी में छोटे-मोटे दुर्गण होने की संभावनायें दिखाई देती है। अहँकार, अधमत्व, अत्याग्रह और क्रूरता जैसे दोष जीवन साथी में दिखाई देने की संभावना है। जीवन साथी योग्य, बुद्धिमान और व्यवहार कुशल होगा। पति-पत्नी या पत्नी पति की ऊँचाई में पर्याप्त अन्तर हो सकता है। वायु व उदर विकार से सतर्क रहना हितकर होगा।

आठवें स्थान पर कुंभराशि होने के कारण, आग (अग्नी) से सावधान रहना अनिवार्य है। शारीरिक विकार होते ही तुरन्त उसका इलाज करवाना आपके लिए लाभदायी होगा। वायुदोष, और संधिवात के कारण होनेवाली स्वास्थ्य की कठिनाइयों से बचने के लिए योग्य डाक्टरी सलाह प्राप्त करना लाभदायी होगा। स्वनिवास स्थान से दूरी पर रहने के अनेक संजोग उत्पन्न हो सकते हैं। हो सके तो उनको टाल देना ही योग्य होगा। स्वगृह ही स्वर्गतुल्य माना जाना चाहिए। जो बात या कार्य दूसरों को कठिन लगती हो वह आपके लिए सरल और साधारण होगी। किसी से वस्तुओं का स्वीकार करना या संग्रह करने की आदत से बचते रहना चाहिए। श्रेष्ठ व्यक्तियों के माध्यम से उन्नति प्राप्त हो सकती है। संगीत, रंगमंच और पशुपालन का कार्य आपके लिए आशीर्वाद बन सकता है। लेखन कार्य में भी अभिरुचि हो सकती है। अंधविश्वास, भ्रष्टाचार और संकीर्णता के विरोध में बोलने व लिखने में गज़ब की सफलता मिलेगी। अधिकतम आयु का २२वाँ वर्ष पूर्ण होते होते कार्यारंभ का योग प्राप्त होगा।

लेन देन के कार्य में बड़ी सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले व्यक्ति हैं। कई बार आवश्यकता उत्पन्न होने पर भी रुपये खर्च करने में झिझकते हैं। इस कारण से लोग आपको कंजूस मानते हैं। रुपयों के लेन देन में बड़े चपल होते हुए भी किसी न किसी जगह फँसने की संभावना रखते हैं। संपत्ति एकत्रित करने के कार्य में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। धन के व्यय का भी सामना करना पड़ेगा। आपके लिए संपत्ति एकत्रित करने का एक मार्ग जो दिखाई देता है वह है व्यापार। जीवन के १७, २४,२९,३१,३९,४९ और ५२ वाँ वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

गृहस्थान के स्वामी

लग्नाधिपति आठवें स्थान पर हैं। शिक्षण क्षेत्र में आपकी उन्नति सुनिश्चित है। अपने स्वास्थ्य की ओर लापरवाह रहने से अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक लौकिक कार्यों के प्रति अभिरुचि जागृत होगी। जुए के प्रति लगाव उत्पन्न होगा। आपकी नैतिकता की ओर कोई आँख उठाके देखे ऐसे कार्यों से दूर रहना चाहिए। बुरे समय में कुछ संकटों का सामना करना होगा। दुर्भाग्यपूर्ण घटना जीवन में घटित हो सकती है। अनेक व्यक्तियों के दुःख और विरह वेदना बाँटने का दुर्भाग्य प्राप्त होने की संभावना है। आकस्मिक धनाढ्य बनने की कामना हानिप्रद होगी। व्यवसाय और प्रेम संबन्ध में बडा जोखिम न लेना ही बुद्धिमानी होगी।

दूसरा भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से आप एक विद्यासंपन्न व्यक्ति होंगे। समाज के बीच मान्यता प्राप्त होगी। स्वयं ही उल्लासित बनने युक्त अनेक विनोद युक्त कार्य करने का योग है। संपूर्ण संतोष प्राप्ति ही जीवन का ध्येय बनेगा। 'कामी मानी च पण्डितः बहुदार धनैर्युक्तः सुतहीनोडपि' कामी, अभिमानी, विद्वान, बहुदार या द्विभार्यवाले धनवान पर अल्प पुत्रवाले होना संभव है।

तीसरा भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से, इच्छानुसार पिता के माध्यम से सुख और संतुष्टि प्राप्त होगी। विवाह के बाद भाग्योदय की संभावना रखते हैं। संतान प्राप्ति का सौभाग्य उपलब्ध होगा। मानसिक तनाव से मुक्त होने के प्रयास में असफल होने की संभावना है। स्त्रियों के माध्यम सफलता प्राप्त करना सरल होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में थोड़ी न्यूनता आने की संभावना है।

पाँचवां भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से बच्चों के कारण अथवा स्वास्थ्य के कारण समस्या खड़ी होगी। वायु विकार अथवा श्वासरोग से सदा बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। संतान सुख प्राप्त होगा। मानसिक उद्वेग की संभावना है। इस कारण कुछ अंश तक आप का स्वभाव क्रोधी होगा।

छठ्ठा भावाधिपति दूसरे स्थान पर रहने से आप पराक्रमशील हैं और कीर्ति के मालिक हैं। परदेश गमन की संभावना रखते हैं। आप मधुरभाषी हैं। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की संभावना है। आप सेहत से सशक्त और निरोगी रहेंगे।

आठवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से जीवनसाथी से सुमेल और सहयोग स्थापित करने में ज़्यादा प्रयत्नशील रहना होगा। अपने कार्यक्षेत्र में

भी अनेक मुश्किलों का सामना करना होगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान देना लाभदायक होगा। भक्तिपूर्ण कार्यों में अभिरुचि रहेगी। लेकिन वह गुप्त रहेगी। आप अपने मनोभाव जल्दी से अभिव्यक्त नहीं करते। अन्य की संपत्ति आपको प्राप्त होगी।

दसवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से अपने कार्यक्षेत्र में प्रगति की गति धीमी रहेगी। स्वरक्षण के लिए अन्य किसी पर गलतियाँ डालने के आदि हैं। औसत आयु से अधिक आयु के अधिकारी हैं। गति ही जीवन है, यह मानकर कर्मरूपी मार्ग पर लगातार चलते रहें। परिणाम की न्यूनता से विचलित मत होइये।

लाभ स्थान के स्वामी के दसवें स्थान पर रहने से मानसिक विकारों को ठीक तरीके से काबू में रख पायेंगे। आप अभिनन्दन के पात्र बनेंगे और सम्मानित भी होंगे। भक्तिमय कार्यों के प्रति सम्मान की दृष्टि रखनेवाले हैं। राजपक्ष से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

बारहवाँ भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से निजी कार्यों में ज़्यादा अवरोध उत्पन्न होगा। बडों से आक्षेप होगा कि आप उनका ठीक तरीके से आदर नहीं करते। मित्रों से शत्रुता होगी। योग साधना और तीर्थाटन में अभिरुचि जागृत होगी।

संपत्ति, अभ्यास क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भू, भवन और वाहन आदि का विचार किया जाता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी दसवें स्थान पर रहने से श्रेष्ठ लोगों से और श्रेष्ठ स्थानों से अनेक प्रकार का समर्थन प्राप्त होगा। आप रासायनिक शास्त्र में अभिरुचि रखनेवाली महिला हैं। आप पंचेन्द्रियों को अपने नियंत्रण में रख सकेगी। यह स्वर्ण के साथ सुगंध के मिश्रण जैसी बात होगी। आप आत्मसंयमी महिला हैं। इस कारण सदा आत्म संतोष की अनुभोक्ता हैं। स्त्री में जब आत्मसंयम और आत्मसंतोष एक साथ प्रकट हों तो दिव्यता उसके साथ रहती है। स्वपुरुषार्थ से अर्थात परिश्रम से आध्यात्मिक सत्य की उपलब्धि हो सकती है।

चौथे स्थान का स्वामी शुक्र है। मन की गहराई में छिपी हुई कलापूर्ण रचनात्मकता, सौहार्दमय व्यवहार और तत्वचिंतन प्रकट होने की संभावना है। संगीत के प्रति अनुराग उत्पन्न होगा। शैक्षिक जागरूकता और अनुशासन आप जैसी नारी को साथ और सहयोग देगा। अन्य सहयोगियों के बीच श्रेष्ठ नारी के नाम से जानी जायेंगी। आप स्त्री होते हुए भी तर्क शास्त्र में अति निपुण हैं। आपको तर्क के माध्यम से जीतना कठिन है। यश-कीर्ति और जन समर्थन सरलता से सुलभ होगा।

भावाधिपति, बृहस्पति का स्थान अनुकूल रहने से अशुभ ग्रहों के कुप्रभाव में क्षीणता का अनुभव होगा। अन्य चतुर्थ भाव से संबन्धित कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल होगा।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की गृहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुण दोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर है। आप के कुलीन और शालीनतापूर्ण स्वभाव से हर व्यक्ति आकर्षित होगा। धार्मिक मनोभाव और जीवन की कलात्मक निपुणता जीवन में शोभा वृद्धि करेगी। व्यक्तित्व में आकर्षण होगा। ऐसे सभी संबन्धों से दूर रहना चाहिए जो आपके लिए चर्चा का विषय बन जाये। आप का दांपत्य जीवन सुखमय होगा। आप का मातृभाव संतुष्ठ रहेगा। आप के पति परिश्रमशील और कार्यकुशल होंगे। राजकीय या कलात्मक व्यवसाय में आपके पति की अभिरुचि रहेगी। प्रेरणा और नैतिक शक्ति आप से उनको मिलती रहेगी। कौटुंबिक क्षेत्र में छोटी-मोटी उन्नति और सफलता प्राप्त होगी। अनेक श्रेष्ठ और उच्च पद प्राप्ति की संभावनायें हैं। आप के पति अचानक उन्नति करनेवाले व्यक्ति होंगे।

दक्षिण दिशा से उत्तम जीवनसाथी प्राप्त होने की संभावना दिखाई देती है।

आपके पति लंबे कद और गौवर्णी बदन के व्यक्ति होंगे। वह सुन्दर और सबके आकर्षण का केन्द्र होंगे।

शनि आपकी सातवीं राशि में हैं। विवाह में देरी होने की संभावना है। आप ईश्वर पर भरोसा रखकर तीर्थस्थान की यात्रा करें। आपको एक योग्य पति प्राप्त होगा। आप अपने पति के रूप सौन्दर्य, स्वभाव और व्यक्तित्व पर चर्चा करने में असमर्थ हैं। आपका विवाह एक अविचारित परिस्थिति में होने की संभावना है। आप के पति आयु में आपसे बड़े या कद से बड़े या सांवले होंगे। आपको अपने जन्म स्थान से दूर रहने का अवसर प्राप्त

होगा। सिर संबन्धी रोग या कोई चोट लगने पर सचेत रहना आवश्यक है। बीमारी के चिन्ह प्रकट होते ही उसका उपचार विलंब रहित करना लाभदायक रहेगा।

सूर्य गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपके पति आत्मीयभाव के और परिपूर्ण मानसिक परिपक्वतावाले श्रेष्ठ पुरुष होंगे। आवश्यकता के अनुसार मार्गदर्शन प्राप्त होता रहेगा और इस कारण आपको भाग्यशाली माना जा सकता है।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद होगा। यह निश्चित है।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पति और आपके बीच बार-बार मनःदुख होने की संभावना है। छोटे झगड़े महास्वरूप न ले पायें इसकी आपको सावधानी रखनी होगी। परंपरा का त्याग शीघ्रता में न करना ही लाभप्रद होगा।

सातवाँ स्थान अशुभ स्थिति से प्रभावित हुआ है। इस कारण जो श्रेष्ठ फल प्राप्त होनेवाले हैं उसमें रुकावट उत्पन्न होगी। अनेक लाभ हाथ से छूट जाने की संभावना हैं। विवाह कार्य में विलंब उत्पन्न होगा। कुछ विघ्न सहने होंगे।

शुक्र पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से अन्य दोषयुक्त फल क्षीण होंगे। यथार्थ लाभ प्रत्यक्ष होंगे।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति दूसरे स्थान पर है। आपके पिता स्वाधीन और शक्तिशाली व्यक्ति होंगे। आप एक श्रेष्ठ धनी पिता की पुत्री हैं। आप जैसी महिला के लिए यह एक देवीय अनुग्रह माना जा सकता है।

आपके नौवे भाव में बुध उपस्थित हैं। इसलिए आपको ऊँची शिक्षा प्राप्त होने का भाग्य प्राप्त है। विद्या, धन, संतान और नौकर चाकरों का सुख सदा प्राप्त होगा। परोपकारी कार्य संपन्न होंगे। दानवीर के नाम से ख्याति मिलना संभव होगा।

नवमा भावधिपति पापयुक्त संजोगों से चारों ओर से ढका गया है। अन्य गृहों के सान्निध्य से अनुकूल स्थिति के बदले प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होगी। फिर भी आंशिक सुख की अनुभूति हो सकती है।

पीला रंग और पुखराज पत्थर जडा हुआ आभूषण धारण करने से आपकी चिन्तन शक्ति बढ़ेगी। जन्म पत्रिका में जो गृहदोष होते हैं वह इन रंगों को धारण करने से क्षीण होते हैं। संतान प्राप्ति के लिए भी यह पत्थर लाभप्रद होता है।

गृहस्थिति

ग्रहों के स्थान ग्रहण के अनुसार आपके व्यक्तित्व की विशेषता इस प्रकार है।

चन्द्र आठवें स्थान पर रहा है। स्वयं उपार्जित धन का व्यय होगा फिर भी जीवनसाथी के माध्यम से धन उपार्जन होने की संभावना है। आँखों की बीमारी से बचने के लिए डाक्टरी सलाह आपके लिए अनिवार्य है। जलाशय से बचते रहना आवश्यक है। दमा से बचने की सावधानी रखना योग्य होगा।

सूर्य दसवें स्थान पर रहा है और इस कारण से आप सर्वसंपन्न रहेंगे। आपका जीवन हर क्षेत्र में विजयी बनेगा। सरकारी कार्यों से अथवा विदेशी व्यवहार से अपने काम को जोड़ने का प्रयत्न करें तो लाभप्रद रहेगा।

शुक्र दसवें स्थान पर रहा है। आप बचपन से ही कलाप्रेमी रहे हैं। आगे चलकर कला के माध्यम से आपकी आजीविका स्थायी होने की संभावना है। जीवन सुख और संतोष से भरा रहेगा। मित्र और बन्धुजनों की कोई कमी नहीं रहेगी।

मंगल (कुज) आठवें स्थान पर रहा है। आपका पत्नी के साथ का व्यवहार रूष्ट होगा। कार्य की सफलता को प्राप्त करने के लिए कोई अयोग्य मार्ग भी स्वीकारने में आप तत्परता दिखायेंगे। जीवनकाल में शल्यक्रिया करवानी होगी। आप निरपराधी होते हुए भी आक्षेपित होने की संभावना रखते हैं। अपरिचित व्यक्ति के साथ यौन संबन्ध विकार कारक हो सकता है।

गुरु दूसरे स्थान पर रहने से आर्थिक दबाव से संपूर्णतया मुक्त रहनेवाले हैं। आप ज्ञानी पुरुष हैं। अन्य लोगों को मदद करने के अभिलाषी हैं। नए-नए पकवान खाने में अभिरुचि रखनेवाले हैं। वाणी प्रामाणिक होगी।

राहु छठ्ठे स्थान पर रहा है। वह संपत्ति का मालिक है। दीर्घ आयु का जीवन प्राप्त है। चर्मरोग के लक्षण प्रकट होते ही तुरन्त डाक्टरी इलाज करना बुद्धिगम्य माना जायेगा। प्रणय संबन्ध से दूर रहना अच्छा होगा। क्योंकि उसमें संतोष कम और दुःख ज़्यादा प्राप्त होगा।

केतु बारहवें स्थान पर रहने से चिंतन कार्य में आप चपल हैं। आप शशक्त मन और आत्मा के मालिक हैं। व्यर्थ के
खर्च करने के आदी हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। कुंडली में ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा -फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों को जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

गुरु दशा

इस दशा में आप उत्साही महिला बनेंगी। श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति की संभावनायें हैं। अन्य की अपेक्षा आप को ज़्यादा सफलता मिलती दिखाई देगी। आप जो कुँवारी हों तो विवाह का योग निकट है। इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। संतान प्राप्ति का योग भी निकट है। जीवन साथी से सुखद व्यवहार होने की संभावनायें हैं। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। घर के बड़ों या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूलभाव मिलता रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। स्वजनों से वियोग व्यथा सहना होगा। ई.एन.टी डाक्टर का उपदेश लेकर उन अव्यवों का उपचार करना अच्छा होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। परिश्रमशील महिला का स्वभाव होने पर श्रेष्ठ फल की प्राप्ति होगी। गुरु दशा का आरंभकाल दोष युक्त होते हुए भी उसका अन्तिम समय सुखद और लाभदायी होता है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

∇ (12-09-2014 >> 13-05-2017)

बृहस्पति दशा में शुक्र की अन्तर्दशा में आपको प्रतिकूल स्थिति का सामना करना होगा। आपके स्नेही मित्र या दोस्त दुश्मन में परिवर्तित होंगे। सभी दिशाओं से असुविधा होगी। आपको लज्जित बनानेवाली बातें हो सकती है। आर्थिक उन्नति ज़रूर होगी। आपको विश्लेषण तथा ध्याननिरत होने का मनोबल बढ़ेगा। नए गृह उपकरण प्राप्त होंगे। इस समय अन्य स्त्रियों से रुकावट पैदा हो सकती है। जीवन साथी या जीवन संगिनी को शारिरिक विकार का सामना करना पड़ जा सकता है।

∇ (13-05-2017 >> 1-03-2018)

बृहस्पति दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रुओं की शक्ति क्षीण होगी। आपको मेहमान के रूप में कई पार्टियों में तथा मनोरंजन कार्यों में भाग लेना पड़ेगा। आतिथ्य सन्मान प्राप्त होगा। आप अपनी प्रतिष्टा एवं मान्यता में वृद्धि का एहसास करेंगे। लंबी यात्राओं से होनेवाले कष्ट दूर होंगे। सामान्य स्वाधीनता बढ़ेगी। समूह के बीच सन्मान और मान्यता प्राप्त होगी।

∇ (1-03-2018 >> 1-07-2019)

बृहस्पति दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आप को लौकिक सुख की अनुभूति होगी। शत्रुओं के मनोभाव में स्पष्ट परिवर्तन दिखाई देगा। उनसे प्रेमपूर्ण सहकार प्राप्त होगा। बहुत लोग आपकी सहायता के लिए निकट आयेंगे। आपको अपनी योग्यता दिखानेवाले प्रमाण पत्र भी प्राप्त होंगे। विवाह संबन्धी कार्यों अथवा संतान विषयक कामों में मन चाही सफलता की आशा कर सकते हैं।

∇ (1-07-2019 >> 6-06-2020)

बृहस्पति दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आपको आश्चर्य जनक शक्ति एवं योग्यता प्राप्त होगी। मनोबल में भी वृद्धि होगी। शत्रुओं को जीतने का

सामर्थ्य प्राप्त होगा। आप प्रसिद्धि और स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। आप सुख और शाँति से दिन व्यतीत कर पायेंगे। पूर्व में किसी डाक्टर ने सर्जरी करवाने की सलाह दी होतो, इस समय में यह काम हो सकता है।

∇ (6-06-2020 >> 31-10-2022)

बृहस्पति दशा में राहु की अन्तर्दशा में अनेक विरोधी व्यक्ति क्रियाशील बनेंगे। सत्कार्य के बदले शत्रुभाव उत्पन्न होगा। मानसिक उद्वेग उत्पन्न करनेवाली अनेक घटनायें घटित होगी। वर्तमान का निवास स्थल बदलने की इच्छा प्रकट होगी। अपने संबन्धियों का स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। इस कारण अनेक तरह की कठिनाईयों का सामना करना होगा।

शनि दशा

शनि दुःख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में बुद्धि कुंठित होती है, मृत्यु तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है और सुख दुःख दोनों का अनुभव होता रहता है। सरकार या उच्चधिकारियों से धन मिल सकता है। अनेक सेवक और सहायक आपके चारों ओर रहेंगे। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार और सन्तानों का सुख न होने की संभावना है। भिन्नप्रश्नों से मन चंचल रहेगा। पैरों पर कोई पीड़ा होने की संभावना है। हर व्यक्ति अपनी योग्यतानुसार कर्म फल भोगता है। इस काल में सुख-दुख मिश्रित अनुभव होते हैं। श्रेष्ठ गृहनायिका का पद संभालने का समय है। जीवन के मध्यम काल के बाद जब शनि दशा होती हैं तो अपनी आयु से कम आयु के विपरीत लिंग के व्यक्ति के साथ निकट का संबंध स्थापित होने की संभावनायें रहती है। इस संबन्ध से अयोग्य व्यवहार में बढावा होने की संभावना होने से जागृत रहना लाभदाई होगा। अपनों से नीचे के लोगों के माध्यम से धन लाभ होगा।

शनि वर्गबल के कारण सशक्त स्थिति में रहा है। इस कारण अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

जन्म कुंडली में शनि के द्वारा यश योग बना है। वैभव, कीर्ति, धन और प्रसन्नता आदि की प्राप्ति सरलता से होगी।

शनि अच्छे स्थान में रहने से इस दशा में आपको अपने परिश्रम से पदोन्नति मिलेगी। कृषि और अन्य उत्पादनों से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्वयं ही कुछ संपत्ति कमाने का भाग्य प्राप्त होगा। भिन्न वर्गीय व्यक्तियों से मान व धन प्राप्त होना संभव होगा।

∇ (31-10-2022 >> 2-11-2025)

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप अपने घर में और समूह के बीच अनेक क्लेशों का अनुभव करेंगे। मानसिक और चिंतन शक्ति क्षीण होगी। इस कारण आपके दोस्त सोचेंगे कि आप में मानसिक परिवर्तन आ गया है। निवास स्थान से दूर की यात्रा संभव है। निम्न वृत्ति के लोग आप से काम कराकर लाभ उठाने की कोशिश करेंगे।

∇ (2-11-2025 >> 13-07-2028)

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप का भाग्य चमक उठेगा। आप अपनी आशाओं और लक्ष्यों की पूर्ति करेंगे। आप को जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और मान्यता भी प्राप्त होगी। आप का कर्तव्यबोध प्रशंसनीय होगा। आपको अविचारित मार्ग से कोई सहायता और मार्गदर्शन मिलेगा जिससे आप आगे बढ़ सकेंगे। आपके कार्यक्षेत्र से बदली होने की संभावना है। बौद्धिक विकास के लिए अनुकूल समय है। शुभ कामों के संपन्न होने की पूरी संभावना है।

∇ (13-07-2028 >> 21-08-2029)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आप के व्यक्तिगत स्वातंत्रय पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

∇ (21-08-2029 >> 21-10-2032)

शनि की दशा में शुक्र के अपहार में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबन्ध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी

प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (21-10-2032 >> 3-10-2033)

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबन्ध में बुरा प्रभाव ड़ालेगा। आप अपनी नौकरी में उदास हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

∇ (3-10-2033 >> 4-05-2035)

शनि की दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में स्थिति दुःखद होगी। जीवन में मृत्यु तुल्य दुःखद घटनायें घटित हो सकती हैं। अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से शान्त रखना आवश्यक है। प्रारंभ में ही प्रश्नों को ठीक तरह हल न करने पर जन्मस्थान छोड़कर जाना पड़ेगा। विरक्त और घृणाशील स्थिति में वृद्धि होने की संभावना है। किसी के वियोग की संभावना है।

∇ (4-05-2035 >> 12-06-2036)

शनि की दशा में मंगल के अपहार में आपको दूरयात्रा करके विदेश जाने का योग है। बीमार पड़ना भी संभव है। सब कुछ नष्ट होने का भ्रम उत्पन्न होगा। पर इस काल के अन्त में प्रगति होगी। रोग या चोट के कारण सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

∇ (12-06-2036 >> 19-04-2039)

शनि की दशा में राहू की अन्तर्दशा में एक गहरे कुए में गिरने की संभावना है। आपको हर कदम पर सतर्क रहना होगा। आपके शत्रुओं को आक्रमण करने का अच्छा मौका है। आत्मीय और भक्तिपूर्ण कार्य आपकी भलाई के लिए योग्य रहेगा।

30-10-2041 से प्रारंभ होता है

बुध दशा

इस दशा में आने से बड़े लोगों की सहायता आपको मिलेगी। वे लोग आपसे श्रेष्ठ बर्ताव करेंगे। ज़मीन, जानवर, चिडियां और अच्छे साथियों से आनन्द प्राप्त होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण होते रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा शायद कभी हो जायेगी। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय युक्त रहेगा। साधु-संत् पुरुषों के सेवा कार्य में अति आनंद प्रदान होगा। एक गृह नायिका के स्थान को शोभा दिलानेवाले अनेक कार्य में सफलता प्राप्त होगी। नये मकान के निर्माण की संभावना है। भूमि के संबन्धी कार्यों में जुटने से लाभ होगा।

31-10-2058 से प्रारंभ होता है

केतु दशा

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण अति आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ़ करने को किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। महिलाओं में धीरजशीलता ज़्यादा होती है। इसलिए घबराइये नहीं। वाद विवाद और बदनामी का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता हैं तो धन, पारिवारिक सुख देनेवाला होता है। बालावस्था में इस दशा काल में पढ़ाई में विक्षेप का सामना करना पड़ता है। दूर देशागमन की अनेक संभावनायें हैं। मित्रजन से अनेक समस्या पैदा होगी। सुख और शांति क्षीण होगी। धन नाश का समय है। भक्तिपूर्ण जीवन आश्वासन दिलाता है। अन्य महिलाओं के कारण अन्य लोगों से संबन्ध बिगडेंगे। मानहानि सर्वसाधारण बात बनेगी। कुछ काल बाद आनंदमय वातावरण की प्रतीक्षा कर सकती हैं।

ऊपर बताई गई बातें केतु दशा के प्रभाव का सूचना मात्र है। इससे डरना व्यर्थ होगा। पुरुषार्थ पूर्ण प्रयत्न से मन को बस में रखकर ईश्वर के प्रति निष्ठा रखना बुद्धिपूर्ण कार्य होगा। पुरुषार्थ से आत्मबल में वृद्धि होती है। यह जीवन की सफलता का एक मात्र मार्ग कहा जाता है।

30-10-2065 से प्रारंभ होता है

शुक्र दशा (अथवा भृगु दशा)

पहले किए हुए अच्छे कर्मों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में की जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल पायेंगी। भिन्न प्रकार की सवारियों में कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगा। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या आपको बाधा देगी। संबन्धियों से मानसिक अथवा शारीरिक तौर से अलग रहना पड़ेगा। कभी कभी मन की अशान्ति का अनुभव होगा। विवाह की बात चलती हो तो अल्पकाल में विवाह सुनिश्चित होगा। यह दशा पति के लिए सुखमय होगी। सुखद दांपत्यजीवन और संतान प्राप्ति के लिए यह श्रेष्ठ समय है।

मानसिक संतुलन खो बैठेंगे। गुप्त रोगों का शिकार बनना पड़ जा सकता है। शारीरिक सौन्दर्य और आकर्षण में क्षीणता उत्पन्न होगी। लैंगिक शक्ति दिन-प्रतिदिन दुर्बल होती हुई दिखाई देगी। अपमान और धन नाश नीच मित्रों के माध्यम से हो सकता है। इस कारण सावधानी से हर कदम उठाना बुद्धिगम्य माना जायेगा। जहाँ से आशा की प्रतीक्षा रखेंगे वहाँ निराशा ही उपलब्ध होगी। जिन से मदद की आशा होगी वे विरुद्ध व्यवहार करेंगे। संक्षेप में सहयोग और सहानुभूति का अभाव दिखाई देगा।

नाम : **Sample** (स्त्री)
गृहस्थिती : **16-डिसंम्बर-2015 Noon**
जन्म राशी : **कुंभ**

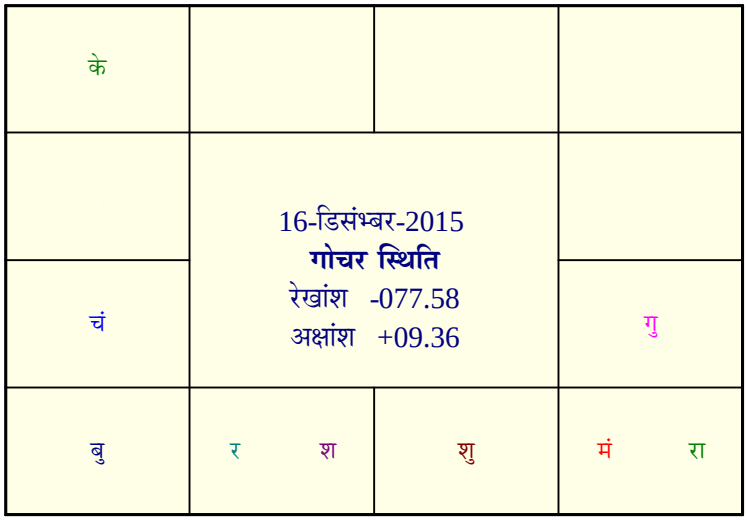

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान में उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्व पूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिकता रखने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जो फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया गया है।

∇ (16-डिसंम्बर-2015 >> 16-डिसंम्बर-2015)

अनेक सुशोभित कार्य आपके माध्यम से होनेवाले हैं। माँगलिक प्रसंग का प्रारंभ काल माना जाता है। सफलता अनेक मार्ग से आपकी ओर आपके पास आ पहुँचेगी। घर में लोगों के बीच गौरवपूर्ण भावना उत्पन्न करनेवाली सफलता सिद्ध होगी। इम्तिहान और इन्टरव्यू में सफलता की सूचना है। निकट के भविष्य में आयोजित परिचय, मिलन आपको लाभ दिलानेवाला होगा। श्रेष्ठ और चिरकालत्व के संबन्ध स्थापित करने का स्वर्ण अवसर माना जाता है। स्त्री को शोभा देनेवाला व्यक्तित्व और सौन्दर्य, आप में झलक उठेगा। प्रगति की श्रृंखला आपका साथ देगी। सुन्दर वातावरण से अनेक लाभदायी अनुभव प्राप्त होंगे। इस निमित्त से अपने कार्य क्षेत्र में हर दिशा से प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

∇ (16-डिसंम्बर-2015 >> 15-जानुवरी-2016)

एक युवती होने के नाते हर कार्य में पूर्ण सुरक्षा की अपेक्षा रखने की आदी हैं। एक के बाद एक सफलता की श्रृंखला का सर्जन होनेवाला है। प्रगति के रास्तों से आगे बढ़नेवाली हैं। व्यापार वाणिज्य से उपार्जन हुआ धन लाभ का उपभोग करने का योग है। शेयर बाज़ार और जुए के प्रति मन आकर्षित होगा। सट्टे बाज़ार में भी दिलचस्पी पैदा होगी। आप भाग्यशाली हैं। इस कारण लाटरी टिकट से लाभ की संभावना भी है। अब आपका स्वास्थ्य आरोग्यपूर्ण रहनेवाला है।

∇ (15-जानुवरी-2016 >> 14-फेब्रुवरी-2016)

अब सूर्य अनुकूल रहनेवाला नहीं है। कार्यक्षेत्र को प्रभावित करनेवाले अनेक प्रश्न उत्पन्न होंगे। पति और उनके संबन्धियों से अयोग्य व्यवहार करने

की संभावना रखते हैं। स्वास्थ्य के प्रति जाग्रत रहना बुद्धिगम्य माना जायेगा। अगर टाल सकें तो अब यात्राओं से दूर ही रहें तो अच्छा होगा। स्वास्थ्य में कमज़ोरी का अनुभव होगा। रोग का शिकार बनना पड़ेगा। इस कारण सतर्क रहना अच्छा होगा। मानसिक शाँति के लिए प्रयत्नशील रहना आवश्यक है। व्यर्थ के खर्चों से बच पाना कठिन होगा।

गुरु का गोचर फल।

हर राशि में गुरु एक साल तक रहता है। गुरु के कारण अति महत्वपूर्ण अनुभव होते रहते हैं। आपकी चन्द्र राशि में वर्तमान में वह क्या फल देगा, यह नीचे दर्शाया जा रहा है।

∇ (16-डिसंभ्बर-2015 >> 5-जानुवरी-2016)

महिमापूर्ण जीवन के कार्यों में गुरु की शक्ति प्रतिभाशील रहेगी। पुरुष वर्ग के समूह में मान्यता उपलब्ध होगी। आकर्षण और प्रतिभापूर्ण व्यक्तित्व प्राप्त होगा। इस समय कार्यकुशलता भरी निपुणता प्रकट होगी। समूह के बीच महिला रत्न मानी जायेंगी। आपके सहयोगियों तथा मित्रों का मूल्यांकन किया जायेगा। ज़िम्मेदारी के कार्य का निर्वाह बड़ी सुन्दरता से किया जायेगा और इस कारण आपका समूह में स्वागत किया जायेगा। असाधारण मान्यता तथा सम्मान प्राप्त होगा। विवाह संबन्धी कामों में सफलता प्राप्त होगी।

∇ (5-जानुवरी-2016 >> 31-डिसंभ्बर-2016)

अब गुरु प्रतिकूल स्थिति पैदा करनेवाला है। एक के बाद एक कठिनाईयाँ और विघ्नों की श्रृंखला उत्पन्न होनेवाली है। इस कारण मन उद्वेग से भर उठेगा। अनेक कार्यों से मन पीछे हट जाने का प्रयास करेगा। निरुत्साही बनना पड़ेगा। असाधारण प्रकार से क्रोधित होना पड़ेगा। स्त्री को शोभा न देनेवाला क्रोध आप में प्रकट होगा। सशक्त मन की अगाधता में कोई विचित्र प्रकार की धुन का अनुभव होगा। इस प्रकार के अनुभव साधारण स्थिति में कौमार्यकाल के अनुभव से दुःख पैदा करनेवाले होते हैं। स्वास्थ्य में गड़बड़ न हो उसके प्रति जागृत रहना अनिवार्य है। साक्षात्कार, प्रतियोगिता और महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल न होगा।

शनि का गोचर फल।

साधारण स्थिति में शनि का गोचर संचार शुभ नहीं होता। शनि के प्रभाव के कारण निराश होना पड़ता है और मन उद्वेग से भर उठता है। फिर भी अनुकूल ग्रह योग स्थिति में अप्रतिक्षित लाभ भी दिलानेवाला होता है। हर राशि में शनि दो वर्ष और छेः महीने तक स्थान गृहण करता है।

∇ (16-डिसंभ्बर-2015 >> 1-मार्च-2017)

हर मार्ग से सफलता को प्राप्त करने की कोशिश जारी रहेगी। आप में शौर्य का जागरण होगा जो एक स्त्री के लिए शोभनीय नहीं रहेगा। व्यर्थ के मतभेद को लेकर पति के साथ कलह होगा। परिवार के बीच भी कलह होगा। मानसिक सन्तुलन बनाये रखना असंभव होगा। सोचे समझे बिना हर कार्य में कूद पड़ने की संभावना दिखती हैं। परिवार की बदनामी न हो इस बात का ध्यान रखें तो फिर कुछ या प्राप्त होगा और सम्मानित होंगी। अभ्यास क्षेत्र में प्रगति प्राप्त करना कठिन होगा। साहित्य कार्य में (लेखन इत्यादि) कमी का अनुभव होगा। अब आप कण्टक शनि के बुरे गोचर से गुज़र रही हैं।

∇ (1-मार्च-2017 >> 15-अगस्त-2019)

आप स्वयं भाग्यवान हैं ऐसा भ्रम होगा। परिवार के बीच और बाहरी क्षेत्र में एक समर्थ स्त्री कहलायेंगी। इस कारण सभी लोगों से बहुमानित होगी। धन-संपत्ति में कोई कमी नहीं रहेगी। धारणा के युक्त काम आगे नहीं बढ़ेंगे। उल्टे गति में कमी का अनुभव होगा। कुछ समय के बाद आप गतिशील बनेंगी। बच्चे संतोष का अनुभव करेंगे। जो कार्य अनेक बाधाओं से रुके पड़े थे वे गतिमान होंगे और इस कारण स्वस्थता का अनुभव होगा। श्रेष्ठ और उच्चतर कार्यालयों से अनुमोदनीय बुलावे प्राप्त होंगे। मान्यता भी प्राप्त होगी। पति के साथ उल्हासमय, रस भरपूर जीवन बिताने की स्वर्ण अवसर प्राप्त होगा। लाभ के स्रोतों में वृद्धि की आशा कर सकती हैं।

With best wishes,

Astro-Vision
NetDirect

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.